धन; **असौ**=वह; **मया**=मेरे द्वारा **हतः**=मारा गया; **शत्रुः**=शत्रु; **हनिष्ये**=मैं मारूँगा; **च अपरान्**=औरों को भी; **अपि**=निःसन्देह; **ईश्वरः**=ईश्वर हूँ; **अहम्**=मैं; **अहम्**=मैं; **भोगी**=सब भोगों से युक्त (हूँ); **सिद्धः**=सिद्ध (हूँ); **अहम्**=मैं; **बलवान्**=बलशाली; **सुखी**=सुखी (हूँ); **आढ्यः**=धनवान् ; **अभिजनवान्**=कुलीन सम्बन्धियों के घिरा हुआ; **अस्मि**=(मैं) हूँ ; **कः**=कौन; **अन्यः**=दूसरा; **अस्ति**=है; **सदृशः**=समान; **मया**=मेरे; **यक्ष्ये**=यज्ञ करूँगा; **दास्यामि**=धन दूँगा; **मोदिष्ये**=आनन्द करूँगा; **इति**=इस प्रकार; **अज्ञान**=अज्ञान (द्वारा); **विमोहिताः**=मोहित रहते हैं।

अनुवाद

आसुरी स्वभाव वाले सोचा करते हैं कि मैंने आज यह धन प्राप्त किया और इस मनोरथ को भी प्राप्त करूँगा; मेरे पास इतना धन है और भविष्य में इतना और अधिक बढ़ जायगा। वह शत्रु मेरे द्वारा मारा गया, दूसरे शत्रुओं को भी मारूँगा। मैं सबका ईश्वर हूँ; मैं भोक्ता हूँ, मैं सिद्ध हूँ, बलवान् और सुखी हूँ। मैं बड़ा धनवान् और ऐश्वर्यशाली कुटुम्बियों वाला हूँ। मेरे समान शक्तिशाली और सुखी दूसरा कौन है। मैं यज्ञ करूँगा, मैं दान दूँगा, और आनन्द करूँगा। इस प्रकार के अज्ञान से ये असुर सदा मोहित रहते हैं।।१३-१५।।

अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ।।१६।।

अनेक=भाँति-भाँति से; **चित्तविभ्रान्ताः**=आतुर चित्त वाले; **मोहजाल-समावृताः**=मोह रूप जाल में बँधे हुए; **प्रसक्ताः**=आसक्त; **कामभोगेषु**=विषय-भोग की कामना में; **पतन्ति**=गिरते हैं; **नरके**=नरक में; **अशुचौ**=अपवित्र।

अनुवाद

इस प्रकार भाँति-भाँति की चिंताओं से भ्रमित चित्त वाले, मोहरूप जाल में बँधे हुए तथा विषयभोग में अति आसक्ति वाले दुष्ट महान् अपवित्र नरक में गिरते हैं।।१६।।

तात्पर्य

आसुरी मनुष्य की धन-संचय की इच्छा का कोई अन्त नहीं होता; वह सदा अनन्त बनी रहती है। वह बस यही विचार करता रहता है कि इस समय उसके पास कितनी पूंजी है और उसे किस प्रकार अधिक से अधिक बढ़ाया जाय। इसके लिए वह कुछ भी पापकर्म करने में संकोच नहीं करता; यहाँ तक कि इन्द्रियतृप्ति के लिए काला बाजार तक करता है। अपनी भूमि, परिवार, घर, धन आदि सम्पत्ति के मोह में वह उन्हें बढ़ाने की चिन्ता में रहता है। वह केवल अपनी सामर्थ्य में विश्वास रखता है और यह नहीं जानता कि उसे जो कुछ भी उपलब्धि होती है, वह सब पूर्वजन्म के पुण्यों का परिणाम है। वह नहीं समझ पाता कि उसे धन-संचय का अवसर पूर्वजन्म के कारणों से मिला है। आसुरी मनुष्य का विश्वास केवल अपनी शक्ति में रहता है, कर्म के